ISBN: 978-93-89136-12-8
IMPRINT: BAHUVACHAN

TRAVEL
₹795 HB

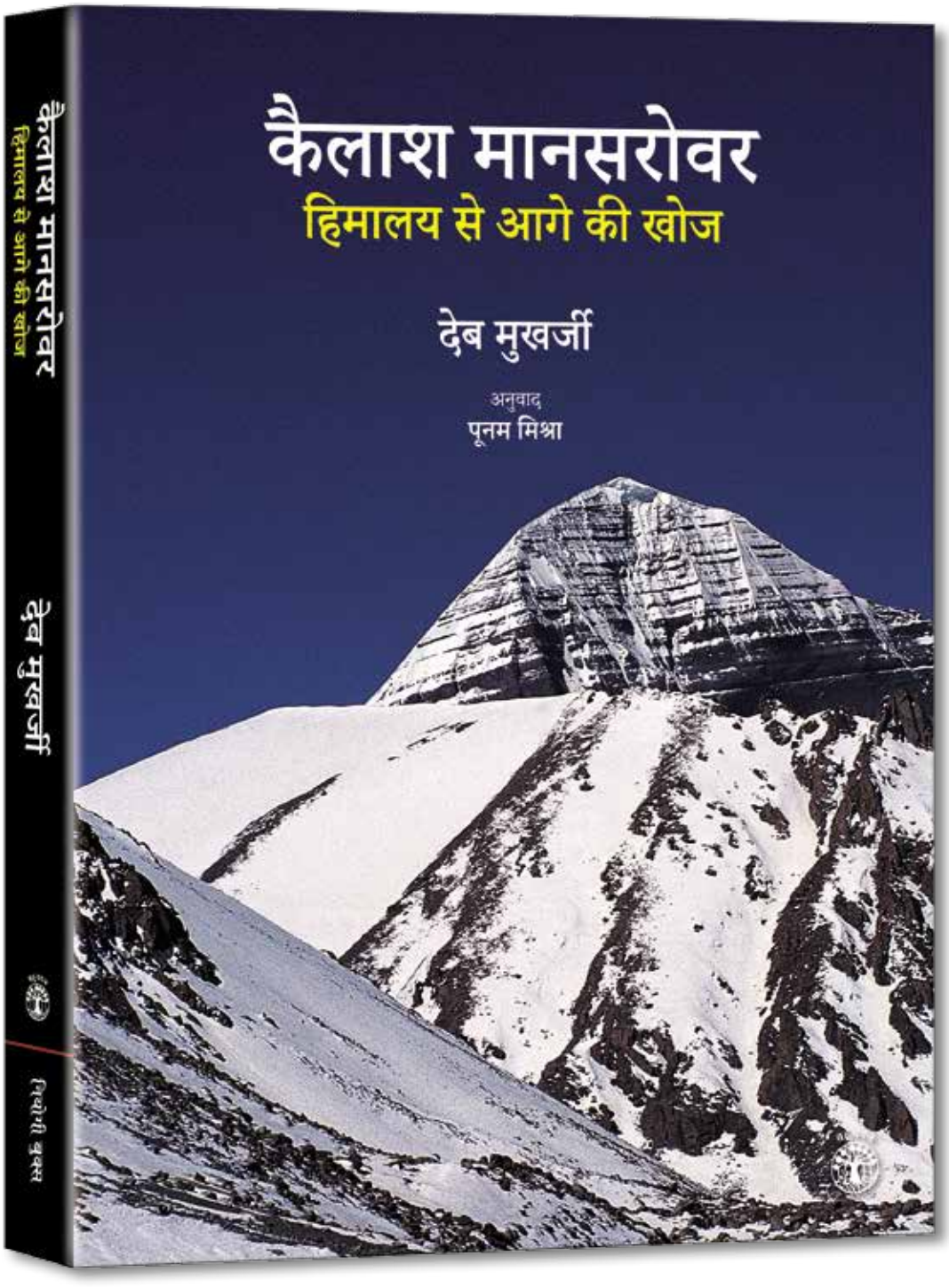

Published by
NIYOGI BOOKS
Fine publishing within reach

NIYOGI BOOKS PRIVATE LIMITED
Block D, Building No. 77, Okhla Industrial Area, Phase-1, New Delhi-110020, INDIA
Phone: 011 26816301, 26818960, Email: niyogibooks@gmail.com, Website: www.niyogibooksindia.com

KOLKATA OFFICE
12/1A, 1st Floor, Bankim Chatterjee Street, Kolkata - 700073, West Bengal, INDIA
Ph: 033 22410001 • e-mail: niyogibooks.kol@gmail.com

कैलाश मानसरोवर

हिमालय से आगे की खोज

देब मुखर्जी

अनुवाद

पूनम मिश्रा

TRAVEL
₹795
ISBN: 978-93-89136-12-8
Size: 235mm x 178mm; 184pp
130 gsm art paper (matt)
All colour; 178 photographs
Hardback with dust jacket

अनंत काल से कैलाश मानसरोवर भारत, नेपाल और तिब्बत के लोगों की आस्था और कल्पना का अविभाज्य हिस्सा रहा है। यहाँ के निवासियों पर इसका गहरा प्रभाव आज भी देखा जाता है। हिंदू और बौद्ध अनुयायी इसे परम तीर्थ मानते हैं।

देवों में सबसे शक्तिशाली और सबसे रहस्यमयी भगवान शिव का निवास स्थान है कैलाश, जो यहाँ अपनी पत्नी, हिमालय की पुत्री पार्वती के साथ निवास करते हैं। समय के साथ कैलाश की पहचान मेरू नाम के उस कल्पित पर्वत के रूप में हुई, जो इस ब्रह्मांड का केंद्र था। जिसके इर्द-गिर्द दुनिया घूमती थी।

हिंदुओं का स्फटिक पर्वत कैलाश और बौद्ध धर्मियों के लिए कांग रिनपोचे है, जो हिम से घिरा हुआ पर्वत है, जहाँ हेरुका चंक्रसंवर रहते हैं, जो शिव के समान ही अर्धचंद्र से सुशोभित हैं। बोन संप्रदाय के लोग इसे तिसे पुकारते हैं और जैन अनुयायियों के लिए यह अष्टपद है, जहाँ प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव ने निर्वाण प्राप्त किया था।

'कैलाश मानसरोवर: हिमालय से आगे की खोज' पुस्तक में पौराणिक कथाओं और सदियों के तीर्थयात्रियों के अनुभवों से खोज करके यह चित्रित किया गया है कि युगों से लोगों के लिए कैलाश का क्या महत्व है! कैसे इसका प्रभाव साहित्य एवं महानतम वास्तुकला में व्याप्त है!
पुस्तक के अंतर्गत 21 वर्षों के अंतराल में की गई लेखक की तीन यात्राओं का विस्तृत विवरण है, जो भारत से पारंपरिक तीर्थयात्रा मार्ग लिपु दर्रे व तिब्बत पार में की गईं। इसमें लगभग दो सौ चित्र भी संलग्न हैं।

- 1962 के भारत-चीन सीमा युद्ध के बाद कैलाश मानसरोवर की यात्रा लगभग 20 साल बाद शुरू हुई। लेखक की पहली यात्रा के रोचक अनुभव।
- सन 1981, 1993 और 2002 में की गईं लेखक की तीन यात्राओं का विस्तृत वृत्तांत।
- पवित्र कैलाश और पावन मानसरोवर के प्राकृतिक और आध्यात्मिक महत्व का चित्रण करतीं 200 अद्भुत तसवीरें।

देब मुखर्जी ने सितंबर 1981 में लिपु दर्रे को पार कर कैलाश मानसरोवर की यात्रा करने वाले पहले भारतीय तीर्थयात्रियों के दल का संचालन किया। भारत और चीन की सरकारों के बीच हुए समझौते के फलस्वरूप भारतीय तीर्थयात्री बीस साल के अंतराल के बाद वहाँ गए थे। वह 1993 और 2002 में दोबारा उस क्षेत्र में गए, जब उन्होंने तिब्बती पठार को काठमांडू से पार किया।

लेखक पिछले पाँच दशकों से अधिक समय से हिमालय की यात्राएँ करते रहे हैं। उनके द्वारा लिए गए चित्र अनेक पत्रिकाओं में प्रकाशित और कई प्रदर्शनियों में प्रदर्शित हो चुके हैं। उन्होंने दो पुस्तकें भी लिखी हैं, एक नेपाल के ऊपर और दूसरी कैलाश मानसरोवर की यात्रा पर।

देब मुखर्जी भारतीय विदेश सेवा के सदस्य थे और वर्तमान में दिल्ली में रहते हैं।

पूनम मिश्रा ने भौतिक विज्ञान में एम.एससी. की है और एमबीए की डिग्री प्राप्त है। वे भारत सरकार के सार्वजनिक उद्यम में अधिकारी रह चुकी हैं। अब वे स्वतंत्र रूप से लेखन और अनुवाद करती हैं। उन्होंने भारत सरकार के विज्ञान और टेक्नोलाजी विभाग से संबद्ध 'विज्ञान प्रसार' और अन्य पत्रिकाओं के लिए कई अनुवाद किए हैं।